

सम्पादकीय

विश्व सिनेमा की जादुई दुनिया: स्क्रीनप्लॉ राइटर जीन-क्लाउड केरिए



जीन-कलाउड कैरिएर बनना तो टीचर चाहता था मगर बन गया स्क्रीनप्ले राइटर एवं निर्देशक। फिल्म स्क्रिप्ट में उसका पहला काम सहायक का था, उसने जॉक टैटी के सहायक के रूप में स्क्रीनप्ले लिखा था। वही टैटी जो 'दि इन्सुनिस्ट', 'ट्रैफिक' जैसी फिल्मों के स्क्रीनप्ले राइटर के रूप में जाने जाते हैं। पटकथा लेखन फिल्म (कथा) की केन्द्रीय आधार भूमि होती है, जिस पर निर्देशक फिल्म का ताना-बाना खड़ा करता है। निर्देशन सुयोग याथों में जितना ज्ञानात्मक संवेदन के साथ होगा, कथा अपने उद्देश्य पर उतनी पहुंचेगी। तो आज बात करती हूं, स्क्रीनप्ले राइटर जीन-कलाउड कैरिएर की। वैसे जीन-कलाउड कैरिएर पटकथा लेखन के साथ-साथ अभिनेता तथा निर्देशक भी थे। उन्होंने मिलान कुंडेरा जैसे उपन्यासकार के काम पर बनने वाली फिल्म की पटकथा लिखी। उन्होंने लुई बुनेल, लुई माले, मिलोस फोरमैन, साउल जेन्ट जैसे सिने-निर्देशकों के साथ काम किया, उनके साथ मिल कर फिल्म की स्क्रिप्ट लिखी। जीन-कलाउड कैरिएर का जन्म 17 सितम्बर 1931 को फांस में हुआ था। पहले उनका विवाह निकोल जेनिन से हुआ। मगर यह रिश्ता कुछ दिन के बाद तलाक में बदल गया। नेहाल तेजाडोड उनकी दूसरी पत्नी हैं, जो कैरिएर की मृत्यु तक उनके संग थीं। कैरिएर की बेटी का नाम आइरिस कैरिएर है। जीन-कलाउड कैरिएर की पेरिस में 8 फरवरी 2021 को मृत्यु हुई। जीन-कलाउड कैरिएर ने मिलान कुंडेरा (जिनकी अभी हाल में मृत्यु हुई है) के उपन्यास 'दि अन-बेयेरेबल लाइटनेस ऑफ बीइंग' पर इसी नाम से बनने वाली 1988 की फिल्म का लेखन किया जिसमें निर्देशक फिलिप कौफमैन ने भी सहयोग दिया। फिलिप कौफमैन निर्देशित इस फिल्म में 1968 के सेंट्रल यूरोप में कहानी चलती है। करीब तीन घंटे तक दूप तापा सेंट्रल पिल्टा में पांच लोग जॉन-बेयेरेबल लाइटनेस ऑफ बीइंग के लिए बैठे थे।

यह मानना भ्रामक है कि निचले तबके की स्त्रियों को ही पुरुष वर्चस्ववादी समाज का दबाव या अत्याचार सहना पड़ता है। उच्च वर्ग की महिलाओं को भी उतने ही समझाते करने पड़ते हैं। हिंदी सिनेमा की अभिनेत्री नीतू सिंह की सोशल मीडिया पर बेहद मजबूत उपस्थिति गौर करने लायक है। हालांकि यह प्रतिभास संपत्र अभिनेत्री अब भी फिल्मों में कभी-कभार दिख जाती हैं, लेकिन ऋषि कपूर के जीवित रहते हुए शायद ही अखबार, टेलीविजन, फेसबुक, टिवटर, इंस्टाग्राम और पार्टीयों में उनकी ऐसी उपस्थिति दिखती थी। बीते दिनों की इस सदाबहार अभिनेत्री को जनता जैसे भूल ही गई थी। पर हाल के वर्षों में उन्होंने फिर से खुद को प्रासांसिक बनाया है। कहा जाता है कि हर पुरुष की सफलता के पीछे किसी नारी का योगदान होता है। वैसे ही नारी की सफलता के लिए आत्मनिर्भरता जरूरी है। मैंने तो पति के गुजरात जाने या उसका साथ छोड़ देने पर कई महिलाओं को सफलता की सीढ़ियां चढ़ाते देखा है। यह मानना भ्रामक है कि निचले तबके की स्त्रियों को ही पुरुष वर्चस्ववादी समाज का दबाव या अत्याचार सहना पड़ता है। उच्च वर्ग की महिलाओं को भी उतने ही समझाते करने पड़ते हैं। बांग्लादेश की चर्चित अभिनेत्री परीमणि ने कुछ दिन पहले घोषणा की थी कि चूंकि उनके पति ने निरंतर उनका शारीरिक-मानसिक शोषण किया, इसलिए

वह पति से सारे रिश्ते खत्म कर रही हैं। मानने का कारण है कि उनकी उस घोषणा के बाद उनके परिचितों-परिजनों का उन पर अपना फैसला वापस लेने का दबाव बना। कुछ लोग तो सोशल मीडिया पर उन पर उल्जुलूल आरोप लगाने तक से बाज नहीं आए। नतीजा वही हुआ, जिसकी आशंका थी। अखिरकार परीमणि को समझौता करना पड़ा, और फेसबुक पर पति से तलाक लेने की जो सूचना उहोंने पोस्ट की थी, वह उहोंने डिलीट की। परिवार और समाज के दबाव पर परीमणि को उसी पुरुष के साथ रहने के लिए विवश होना पड़ा, जिससे वह अलग होना चाहती थीं। जाहिरहै, उन्हें फिर से वही शारीरिक-मानसिक शोषण का सामना करना पड़ेगा। फिर वह अंदर-बाहर से टूटी-घुटी रहेंगी। फिर भी चुप रहना पड़ेगा। बांग्लादेश में असंचय महिलाओं की चहेती परीमणि को असंचय शोषित महिलाओं की तरह गूँगी और सहनशील बनकर जीवन बिताना पड़ेगा। पति की सफलता के पीछे उनके योगदान को स्वीकारा जाएगा। लेकिन उन्हें अपनी सफलता के लिए इंतजार करना पड़ेगा। और क्या पता, पारिवारिक-सामाजिक दबावों के आगे समर्पण कर देने वाली परीमणि को वह सफलता कभी मिले ही न, जो वह चाहती हैं। वह सफलता शायद उन्हें अकेले रहने पर मिल सकती है। जिस तरह हमारे समाज में महिलाओं के लिए पति की

A vertical strip of a television screen. At the top left is the 'colors' channel logo with a red leaf-like shape above it. To its right is the 'Dance DEEWANE JUNIORS' logo with a starburst graphic. The bottom half of the screen shows a dark background with the 'colors' logo again on the right side.

के बाद पुलिस अधिकारी ने मीडिया में जो बयान जारी किया, उसके मुताबिक, मजनूँ का यह अपराध उसके पहले के अपराधों की तुलना में ज्यादा गंभीर है। उसने इससे पहले व्या अपराध किया था? पता चलता है कि इससे पहले भी उसने कई गरीब और दिव्यांग लड़कियों के साथ यही घृणित अपराध किया था। पुलिस अधिकारी शायद यह कहना चाह रहे हों कि एक के बाद अपराध करने के कारण मजनूँ का जुर्म ज्यादा गंभीर है। यह सही हो सकता है, लेकिन पुलिस अधिकारी के बयान से इसका भी आभास मिलता है कि एक पढ़ी-लिखी लड़की के साथ यौन अपराध गंभीर मामला है। जिस समाज में पुलिस-प्रशासन के उच्च पदों पर आसीन लोग तक स्त्री के खिलाफ अपराधों में फर्क करते हैं, उस समाज में महिलाओं को न्याय दिलाना बहुत आसान नहीं है। यह मानने का

इतिहास, संस्कृति और धर्म का पर्व, जब देश एकता के सूत्र में बंधता है..

हर साल 14 जनवरी को धनु से मकर राशि व दक्षिणायन से उत्तरायण में सूर्य के प्रवेश के साथ यह पर्व संपूर्ण भारत सहित विदेशों में भी अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पंजाब व जम्मू-कश्मीर में %लोहड़ी% के नाम से प्रचलित यह पर्व भगवान बाल कृष्ण के द्वारा %लोहिता% नामक राक्षसी के बध की खुशी में मनाया जाता है। इस दिन पंजाबी भाई जगह-जगह अलाव जलाकर उसके च्हुंहोंर भांगड़ा नृत्य कर अपनी खुशी जाहिर करते हैं व पांच वस्तुएं तिल, गुड़, मक्का, मूंगफली व गजक से बने प्रसाद की अग्नि में आहुति प्रदान करते हैं। भारत देश में अलग-अलग त्योहारों के अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। यहां लगभग हर दिन ही कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। लोग बड़े ही उत्साह और धूमधाम से इन पर्वों को मनाते हैं। जैसे-साल की शुरुआत हो चुकी है और आज देश मकर संक्रांति का त्योहार मना रहा है। इस पर्व को मनाने की अपनी मान्यताएं हैं और लोगों की आस्था भी। कोई भी पर्व सिर्फ एक त्योहार के रूप में नहीं होता बल्कि, ये ही हैं जो लोगों को आपस में जोड़े रखता है और आपसी भाईचारे को भी बढ़ाता है। ऐसा ही कुछ मकर संक्रांति के त्योहार में भी नजर आता है। अगर यूं कहा जाए कि ये पर्व अनेकता में एकता का सदेश देना वाला पर्व है, तो शायद इसमें कोई दो राय न हो। हर साल 14 जनवरी को धनु से मकर राशि व दक्षिणायन से उत्तरायण में सूर्य के प्रवेश के साथ यह पर्व संपूर्ण भारत सहित विदेशों में भी अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पंजाब व जम्मू-कश्मीर में %लोहड़ी% के नाम से प्रचलित यह पर्व भगवान बाल कृष्ण के द्वारा %लोहिता% नामक गश्थमी के बध की खुशी में मनाया

जाता है। इस दिन पंजाबी भाषा जगह-जगह अलाव जलाकर उसके चहुंओर भांगड़ा नुत्र कर अपनी खुशी जाहिर करते हैं व धांच वस्तुपूर्ण तिल, गुड़, मक्का, मूँगफली व गजक से बने प्रसाद की अग्नि में आहुति प्रदान करते हैं। वहीं देश के दक्षिणी इलाकों में इस पर्व को %पोंगल% के रूप में मनाने की परंपरा है। फसल कटाई की खुशी में तमिल हिंदुओं के बीच हर्षोल्लस के साथ चार दिवस तक मनाये जाने वाले %पोंगल% का अर्थ बिल्लव या उकान है। इस दिन तमिल परिवारों में चावल और दूध के मिश्रण से जो खीर बनाई जाती है, उसे %पोंगल% कहा जाता है। इसी तरह गुजरात में मकर संक्रांति का ये पर्व %उत्तराश% के नाम से मनाया जाता है, तो महाराष्ट्र में इस दिन लोग एक-दूसरे के घर जाकर तिल और गुड़ से बने लड्डू खिलाकर मराठी में %तीळ गुळ घ्या आणि गाड गोड बोला% कहते हैं। जिसका हिन्दी में अर्थ होता है तिल और गुड़ के लड्डू खाइए और मीठा-मीठा बोलिए। वहीं असम प्रदेश में इस पर्व को %माघ बिहू% के नाम से जाना जाता है। इसी तरह प्रयागराज में माघ मेले व गंगा सागर मेले के रूप में मनाए जाने वाले इस पर्व पर %खिचडी% नामक स्वादिष्ट व्यंजन बनाकर खाने की परंपरा है। जनश्रुति है कि शीत के दिनों में खिचड़ी खाने से शरीर को नई ऊर्जा मिलती है। मकर संक्रांति को मनाने के पीछे अनेक धार्मिक कारण भी हैं। इसी दिन गंगा भागीरथ के पीछे चलकर कपिल मनु के आश्रम से होते हुए सागर में जा मिली थीं। इस दिन भीष्म पितामह ने सूर्य के उत्तरायण की दिशा में गमन के साथ ही स्वेच्छा से अपना देह त्यागा था। यह दिन ऋद्धा, भक्ति, जप, तप, अर्पण व दान-पूण्य का दिन माना जाता है। हिंदू धर्मात्मलविद्यों के लिए मूल संक्रांति का

महत्व वैसा ही जैसा कि बूँदों में पीपल, हाथियों में ऐरवत और पहाड़ों में हिमालय का है। भले मकर संक्रांति का पर्व देश के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता हों पर इसके पीछे समस्त लोगों की भावना एक ही है। तित और गुड़ के व्यंजन हमें एक होने का संदेश देते हैं। वहीं नीले आकाश में शीतल वायु के संग उड़ती पतंग मानवीय यथार्थ से रू-ब-रू करवाती है। इंसान को शिखर पर पहुंच कर भी अभिमान नहीं करना चाहिए, यह पतंग भली पांति समझती है। जिस प्रकार पतंग भले कितनी ही क्यों न ऊँचे आकाश में उड़े, पर उसे खींचने वाली डोर इंसान के हाथ में ही रहती है। वैसे ही इंसान भी भले कितना ही अकूट धन-दौलत के अभिमान की हवा के बूते विलासिता व ऐश्वर्य के आसमान में उड़े, लेकिन उसके सांसों की डोर भी परमपिता परमेश्वर अविनशी के हाथों में ही रहती है। पतंग हो या इंसान, दोनों का माटी में विलीन होना तय है, इसलिए इंसान को भूलकर भी अपने जड़ों और संस्कारों से दूर होकर कोई भी अमानवीय कल्प नहीं करना चाहिए। मकर संक्रांति के दौरान लोगों में पतंगबाजी का उत्सास चरम पर होता है। देश में प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के त्योहार के एक महीने पहले ही पतंगबाजी का सिलसिला प्रारंभ हो जाता है। शीतलहर के साथ पतंगबाजी का लुक्फ़ उठाने को लेकर बच्चों के माझ लड़े भी आपने को गेंक नहीं पाए

हैं। इस दोरान बाजार भी पतंगों से गुलजार होने लग जाते हैं। लेकिन हर साल पतंगबाजी के दरमियान जो चिंताजनक पहलू निकल कर सामने आता है वो है चाइनीज मांझे के कारण बेजुबान पक्षियों की होने वाली मौतें। हालांकि, पिछले साल नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने देशभर में पतंग उड़ाने के लिए इस्सेमाल होने वाले नायतालें और चाइनीज मांझे की खरीद फरोख्त, स्टोरेज और इस्सेमाल पर रोक लगा दी थी। एनजीटी ने यह रोक ग्लास कोटिंग वाले कॉटन मांझे पर भी लगाई थी और अपने आदेश में सिर्फ सूती धागे से ही पतंग उड़ाने की इजाजत दी थी। लेकिन, इसके बावजूद बाजारों में अवैध तरीके से चाइनीज मांझे की धड़ल्के से बिक्री देखी जा सकती है। दरअसल, चाइनीज मांझे को बनाने में कुल पांच प्रकार के केमिकल और अन्य धातुओं का प्रयोग किया जाता है। इनमें सीसा, वजरम नामक औद्योगिक गोंद, मैदा फलरौ, एल्युमीनियम ऑक्साइड और जिरकोनिया ऑक्साइड का प्रयोग होता है। इन सभी चीजों को मिक्स करके कांच के महीन टुकड़ों से रगड़कर तेज धार वाला चाइनीज मांझा तैयार किया जाता है। जिसके संर्पक्ष में आते ही पतंगे कट जाती हैं। जहां एक ओर चाइनीज मांझा आकाश में उत्सुक उड़ान भरने वाले पक्षियों की गह में रोड़ा बनकर उनके प्राण छीनता है, तो दूसरी ओर इसके कारण वाहन हादसे भी अंजाम लेते हैं। वहीं पतंगबाजी करने वाले लोगों के हाथों की अंगुलियां व चेहरा भी चाइनीज मांझा के कारण जख्मी हो जाता है। हमें सोचना चाहिए कि पक्षियों की हमारी तरह दुनिया, बच्चे व परिवार होता है। वे सुबह दाने की तलाश में अपनी रद्दाएं भरते हैं और ज्ञाप

को अपने घोंसले में वापस लौटकर आते हैं। बच्चे उनकी प्रतीक्षा में होते हैं। लेकिन किसी रोज हमारे द्वारा चाइनीज माझे से की जा रही पतंगबाजी के कारण उनका अपने बच्चों के पास लौटना तो दूर तलक उनके मरने की कोई खबर भी उन तक नहीं पहुंच पाती है। वहीं कई पक्षी चाइनीज माझे की चेपेट में आकर धरती पर बंटों-बंटों तक तड़पते रहते हैं, उनकी इस स्थिति में सुध लेने वाला भी कोई नहीं होता है। जहां हमारी भारतीय संस्कृति में पशु-पक्षियों के संरक्षण की परंपरा रही है। इस कारण हम अल्सुवह उठकर चबूतरे पर पक्षियों के लिए दाना और पानी देने को अपना पुण्य समझते हैं। वहीं हमें सोचना चाहिए कि हम चाइनीज माझे की ओर से पतंगबाजी करके कई पक्षियों की जान लेकर अपने पुण्य पर पानी तो नहीं फेर रहे हैं? आवश्यकता है कि प्रशासन चाइनीज माझे की हो रही गैर-कानूनी बिक्री को लेकर अपनी कार्यवाही तेज करें। ऐसे दुकानदारों पर तुरंत शिकंजा करें, जो नियमों की सीमा लांबकर अवैध रूप से चाइनीज माझे का व्यापार करते हैं। जरूरत है कि पतंगबाजी सामूहिक रूप से किसी खुले मैदान में एक निश्चित समय सीमा में हो, ताकि पक्षियों की हँसती खिलखिलाती दुनिया सत्तामत रह सकें और मनुष्य पुण्य के पर्व के दिनों में पाप का भागीदारी होने से बच सके। हमें मकर संक्रान्ति को पतंगबाजी व तिल और गुड़ के स्वादिष्ट व्यंजनों तक ही सीमित न रखकर इस पावन पर्व पर आपसी रंजिश और बैर मिटाकर प्रेम, स्नेह, भाईचारे व अपनत्व के साथ रहते हुए हिंदू-मुस्लिम का भेद भुलाकर अनेकता में एकता की मिसाल संपूर्ण जगत में दीपिमान करनी होगी। तभी जाकर हम सच्चे मायनों में मकर संक्रान्ति के पर्व की महत्वा मिट कर पाएं।

अंतर के उजास सरीखा गायन, शब्दता और सहजता की पक्षधर थीं प्रभा अग्रे

प्रभा अत्रे अमीर खां साहब का
गयकी से आंख से ही प्रभावित रही।
उन्होंने आकाशवाणी में काम करते हुए
अमीर खां साहब और बड़े गुलाम
अली खां साहब के रिकॉर्ड ढूँढ़-दूँढ़का
सुने। मुझे लगता है कि किराना धरान
में अब्दुल करीम खां साहब के बा
%सरगम% को गान में जीवंत करा
का किसी ने प्रयास किया है, और उन
अपने तई निखारते हुए अपना नया
गान-मुहावरा किसी ने बनाया है, ते
वह प्रभा अत्रे ही रही है। प्रभा अ
का निधन भरतीय संगीत में उस यु
का अवसान है, जिसमें गयन के साथ
उससे जुड़ी संवेदना, अध्ययन और
चिंतन-मनन समाया था। वह गयन
शुद्धता की पक्षधर थीं, पांतु लोक क
उस सहजता के प्रति भी उनका आग्रह
था, जिसमें गान प्रकृति में भुलक

ओताओं को सहज माधुर्य प्रदान व है। उन्हें सुनते हुए यह अनुभूति है कि संगीत ध्यान का गान है। उन्हें आखिरी दिनों तक उनके गान अनुठां ओज समाया था। भैरव उनके गाए बोल जगत जननी, तारिणी, तू नव दुर्गा, तू भव महाकाली, तू शिवानी, मंगला... शब्द-शब्द उजास है। एक दफा मांज खमाज में जमुना किनारे गांव, सांकरे... में उनके स्वरों औचक ध्यान गया था। जिस सह से बोल निभाव करते उन्होंने भावे व्यंजना यहां की है, वह लोक-माधुर्य में समाया उनका ३-शास्त्रीय ज्ञान है। सुनेंगे तो पाएँगे यहां सांकरे आ जड़यों में उनकी शुष्क पुकार विरल है। लगता है, जैसे ये को बहुत जतन से उन्होंने अपने

ता
ती
के
में
में
व
गो,
में
ग
रा
पर
ता
की
के
द्य
के
द्-
ग
रो

का अनमोल गहना पहनाया
सच में, आत्म की पुकार है।
शब्द-शब्द यहाँ जैसे माधुर्य छा
रहा है। ऐसे ही उनकी एक दु
कौन गती गयो श्याम...। इसका
को ढूँढ़ने की जो स्वर-लगन
चम्पूत करती है। प्रभा अत्रेव
की यही विशेषता है कि वह भू
सदा जीवंत करती रही है। वा
वालों को सदा अपने स्वरों से
ले जाती हैं। उनका समग्र गायत्री
का उजास सरीखा है। प्रभा अत्रेव
खां साहब की गायकी से अती
ही प्रभावित रहीं। उहोंने आक
में काम करते हुए अपीर खाए
और बड़े गुलाम अली खां सं
रिकॉर्ड ढूँ-ढूँकर सुने। मुझे त
कि किराना घराना में अब्दुल
खां साहब के बाद %सरगम

यह
परं में
पड़े
री है,
श्याम
, वह
गायन
ों को
सुनने
बहा
अंतर
अमीर
भ से
वाणी
माहब
ब के
ता है
करीम
, को

गान में जीवंत करने का
प्रयास किया है, और उसे
निखारते हुए अपना नया गा
किसी ने बनाया है, तो वह
ही रही है। प्रभा अत्र इस म
आद्वितीय थीं कि शास्त्रीय में
लोक में शास्त्रीय सुगंध ।
उन्होंने संगीत की अपने स
भाषा रची। उनके शास्त्रीय
लोक का सहज कठ माधुर्य
है, तो ठुमरी, खयाल, दाद
गीत, नाट्यसंगीत और
शास्त्रीय संगीत के शुद्ध सौ
सहज साक्षात् होता है। वे
आलाप की उनकी बारी की
स्वर-खनक भिन्नता लिपि
किराना घराने की शास्त्रीय
परंपरा में उन्होंने गान में स
से अपनी अलग पहचान ।

केसी ने
नपने तई
मुहावरा
भाभा अत्रे
ने में भी
गोक और
लते हुए
पर नई
गायन में
ला हुआ
गजल,
जनों में
र्थ से भी
रग में
यां और
हुए है।
संगीत
-संधान
र्वाई। वह

जब आठवर्ष की थीं, त
संगीत की शिक्षा से जुड़ी
चिकित्सक की सलाह
बीमार मां का ध्यान बी
के लिए घर में एक संगीत
गया। लेकिन उनकी मां
ही संगीत सीखने से म
तब उसी शिक्षक से प्र
संगीत सीखने की सलाह
इस तरह से बचपन में
उनका नाता जुड़ गया।
सुरेश बाबू मानिकर
बड़ोदकर से बाकायद
बारिकियां सीखीं। वह द
% संगीत जब सीखना प्र
एक साल तक केवल
मुझे सिखाया गया। पर य
की नींव पड़ी, उससे
समझ में आई कि कै

संयोगवश है। दरअसल पर उनकी री से हटाने विशेषकर खातीन दिन में कर दिया। अत्रे को दी गई और उन्होंने संगीत से द में उहोंने पर हीराबाई संगीत की आती रही है, भ किया, तो य यमन ही जो सीखने ह बात भी सुर लगाया

जाता है। कैसे राग में बढ़त की जाती है और कैसे गायन में भाव लाया जाता है? % गायन के साथ-साथ वह नृत्य में भी पारंगत थी। % स्वरमयी%, % स्वरली%, % स्वरागिनी% और % स्वरांजलि% जैसे संगीत-शोध में उहोंने भारतीय संगीत से जुड़ी परंपरा को भी अपने तई संजेया है। उनके आलाप, तान और शब्दों की जोड़बंदी में परंपरागत सौंदर्य की मिठास है, तो परंपरा की वह बढ़त भी है, जिसमें कोई कलाकार अपनी निजी शैली विकसित करते हुए राग को अलंकृत करता है। पुणे में 13 सितंबर, 1932 को जन्मी प्रभा अत्रे को % संगीत नाटक अकादमी%, % गानप्रभाओं आदि कई पुस्तकों के साथ पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण सम्मान भी प्रदान किया गया।

आप देश के लिए खेल रहे : ईशान किशन क्र स्प से थके हुए ईशान किशन पर पूर्व पाकिस्तानी स्टार का तंज

संवाददाता



अकमल ने ईशान पर साधा निशाना

अकमल ने आगे कहा कि किशन का आराम लेने का निर्णय उनकी समझ से रे है। युवा खिलाड़ियों को अपने करियर में इतनी जल्दी ऐसी मांग नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा, %आप खुद को आईपीएल के दो महीने के लिए बचा रहे भारतीय टीम में खेलना बड़ी बात है और यह बहाना मेरी समझ से परे है। मुझे लगता है कि चयन समिति ने ईशान किशन को इस टीम से दूर रखकर अच्छा काम किया है। उन्हें अभी आराम करने दीजिए और फिर घेरेलू क्रिकेट खेलने दीजिए। यह खिलाड़ियों के लिए एक संदेश होना चाहिए कि वे मानसिक थकान कारण जब चाहें आराम की मांग नहीं कर सकते। यह राष्ट्रीय कर्तव्य है। आप ऐसे ही आराम की मांग नहीं कर सकते। उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, शान किशन ने मानसिक थकान की बजह से खुद को दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट मौसम से अलग कर लिया था और इसकी खूब चर्चा हो रही है। अपने करियर के शुरुआती चरण में आपको क्या मानसिक थकान हो सकती है? इस टीम में रोहित शर्मा, विराट कोहली और जसप्रीत बुमराह जैसे खिलाड़ी हैं जो थकान से भी निपटते हैं। वे आईपीएल, अंतरराष्ट्रीय मैच खेलते हैं, जिसमें टेस्ट मैच भी शामिल हैं। इस कारण से खिलाड़ियों के ब्रेक लेने के बारे में कभी नहीं सुना।

ਮੇ਷, ਮਿਥੁਨ ਔਰ ਧਨੁ ਰਾਸ਼ਿ ਵਾਲੋਂ ਕੋ ਗਿਲ ਸਫ਼ਰੀ ਹੈ ਕੋਈ ਅਚੂਕਾ

धनु राशफल 2024 | मिल सकता हो आप अपना क्षमता का बल अमलगा व्यापार कर | अपनी शक्ति में आ रहा समस्याओं प्रयोग में सफल रहा, जिससे सावधान रहने का आवश्यकता हो।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई ट्रियोषन्स, आषा काम्लवे स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उप्र) से प्रकाशित।
 RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं०- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण